परिवार की संरचना एवं इसके प्रकार्य में निरंतरता एवं परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन – "म.प्र. के आदिवासी, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में"

डॉ. देवी नारायण यादव,

सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र एवं प्रभारी प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय खातेगाँव, जिला–देवास (म.प्र.)

शोध सारांश

कृषि की प्रधानता के कारण भारत में संयुक्त परिवार की संख्या सदियों से सर्वाधिक रही है। कृषि की प्रधानता में न केवल संयुक्त परिवार को जन्म दिया बल्कि इसमें मजबूती भी प्रदान की। कृषि व्यवस्था ने खास प्रकार के रहन–सहन, खान–पान, पर्व त्यौहार इत्यादि को पोषित किया।

महिलाओं की भूमिका सुनिश्चित की और बुजुर्गों को अनुकूल प्रतिष्ठा प्रदान की। संयुक्त परिवार में "हम एक है" की भावना को जन्म दिया और इसे आगे बढ़ाया।

परन्तु अंग्रेजों के आने के पश्चात ही संरचना एवं कार्य की दृष्टि से पहले तो धीरे–धीरे परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तेजी से संयुक्त परिवार का विघटन प्रारंभ हुआ और 1991 के बाद से विघटन की रफ्तार और तेज हो गई है। जिन कारकों ने संयुक्त परिवार का विघटन एवं एकांकी परिवार की मजबूती में अपनी भूमिका निभाई उनमें प्रमुख रूप से आधुनिक परिवार, एकांकी परिवार, शिक्षा का प्रचार–प्रसार, आजीविका के लिए कृषि से गैर कृषि की ओर, नगरों में सुविधाओं की बढ़ती रफ्तार, आवश्यकताओं और लालच के बीच की कम होती दूरी, उस लोक के बदले भू–लोक के प्रति बढ़ता प्रेम, नगरीयकरण के कारण संरचना में परिवर्तन, गांव में ही न्याय, कम खाओ गम खाओ, नेता पुरूष ही होते हैं, पहले दूरी किलोमीटर में अब मिनिट में नापते हैं इत्यादि।

आज संयुक्त परिवार काफी तेजी से संरचना एवं प्रकार्य की दृष्टि से विखंडित हो रहा है। दुर्भाग्यवश ऐसे परिवार में तेजी से व्यक्तिवाद और नीजि स्वार्थ हावी हो रहा है। जिस कारण परिवार में बुजुर्ग, घरेलू महिलाएं, असक्त व्यक्ति एवं निर्भर सदस्य की समस्याएं जटिल होती जा रही है। जो शासकीय संस्थाएं या कदम बढ़ाती समस्याओं के निराकरण के लिये कार्यरत है उनमें प्रतिबद्धता का अभाव है। अतः ऐसे समुहों के कल्याण व विकास के लिये वांछित कदम किस प्रकार उठाये जाये कि व्यक्तिवाद के साथ–साथ सामुहिकता की भावना भी मजबूत हो। प्रस्तुत शोध–पत्र परिवार की संरचना एवं इसके प्रकार्य में निरंतरता एवं परिवर्तन की अब तक की यात्रा के साथ–साथ 21 वीं सदी के भारतीय समाजशास्त्र के शिक्षण और शोध की दशा व दिशा को रेखांकित करने को एक विनम्र प्रयास है।

कुंजी – *संयुक्त परिवार, महिला, संरचना, बुजुर्ग, समस्या।*

प्रस्तावना

भारत में पारिवारिक अध्ययन पर साहित्य पिछले दो दशकों में काफी हद तक विकसित हुआ है, हालांकि इस तरह के अध्ययन बिखरे हुए हैं। यह शोध–पत्र लेखन भारत में परिवारों की संरचना एवं इसके प्रकार्य में निरंतरता एवं परिवर्तन के आधार पर वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है,

जिसका उद्देश्य अनुसंधान के विश्लेषण के लिए आधार प्रदान करना है, विशेष रूप से परिवार के विकास के क्षेत्र में। भारतीय परिवारों को पिता या माता द्वारा वंश या वंश के अनुसार पितृसत्तात्मक और मातृसत्तात्मक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। परिवार की संरचना को परिवार में भूमिका, शक्ति, स्थिति और संबंधों के विन्यास के रूप में माना जाता है। जो परिवारों के सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, परिवार के पैटर्न और ग्रामीण क्षेत्र की सीमा पर निर्भर करता है। विवाह पद्धति में विवाह के पैटर्न, शादी के साथी का चयन, शादी में उम्र, शादी के समय साथी की उम्र, शादी की रस्में, वित्तीय आदान–प्रदान और तलाक जैसे विषयों पर जोर दिया जाता है। समकालीन भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के बावजूद परिवार संस्था लोगों के जीवन में एक केन्द्रीय भूमिका निभाती है।

एक परिप्रेक्ष्य भारत में परिवार के अध्ययन की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक इस सवाल से संबंधित है कि क्या संयुक्त परिवार प्रणाली विघटित हो रही है और एक नया एकांकी प्रकार का परिवार पैटर्न उभर रहा है। यह लगभग अवास्तविक लगता है। आगस्टिन बताते हैं हम संयुक्त और एकल परिवार के बीच एक द्वंद्ववाद के बारे में सोचते हैं। यह विशेष रूप से सामाजिक परिवर्तन की कठोरता को देखते हुए सच है, जिसने हमारे देश के परिवार की संरचना एवं इसके प्रकार्य में निरंतरता के साथ–साथ परिवर्तन भी देखने को मिल रहा है।

पूर्ववर्ती अध्ययन

विलियम गुडे ने परिवार में होने वाले परिवर्तनों के संबंध में बताया है कि विश्व स्तर पर परिवार अपने विस्तृत स्वरुप से दाम्पत्य परिवार व्यवस्था की ओर बढ़ा है,जिसके प्रमुख सूचक है– संयुक्त परिवार धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं। माता–पिता का बच्चों के ऊपर तथा पति का पत्नी के ऊपर प्रभुत्व एवं नियंत्रण में कमी हो रही है।

क्लेटन (1979) ने पारिवारिक व्यवस्था में परिवर्तन को आर्थिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन से जोड़ा है। उनका कहना है कि जब समाज में आर्थिक व्यवस्था प्रमुख रुप से कृषि पर अधारित थी तो उस समय संयुक्त परिवार की प्रधानता थी। कृषि व्यवस्था के विकास के पूर्व आदिम कालीन समाज में प्रमुख रुप से मूल परिवार की प्रधानता थी, लेकिन जैसे–जैसे समाज अपने कृषि स्तर से औद्योगिक स्तर की ओर बढ़ता गया मूल परिवार की प्रमुखता फिर से बढ़ने लगी।

सुमन कुमारी (2020) ने संयुक्त परिवार का स्वरुप एवं परिवर्तन की प्रवृत्ति के संबंध में बताया कि संयुक्त परिवार की संरचना में परिवर्तन हो रहा है। संयुक्त परिवार में एकांकिता बढ़ रही है और संयुक्तता घट रही है तथा आवासीय एवं संगठनात्मक प्रकार के परिवारों में पति–पत्नी और बच्चों के समूह की प्रधानता है।

ममता कुमारी ने भारतीय परिवार में परिवार प्रणाली परिवर्तन और कारण में बताया है कि समकालीन भारतीय समाज में शहरीकरण और औद्योगीकरण के बावजूद, परिवार नामक संस्था लोगों के जीवन में एक केन्द्रीय भूमिका निभाती है।

विलियम जे. गुडे ने लगभग 50 वर्षों तक अफ्रीका, मध्य एशिया, चीन, भारत,जापान आदि देशों के परिवार का अध्ययन किया और अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि कृषि प्रधान समाज में परिवार एक आर्थिक इकाई के रुप में कार्य करता है। पुत्र अपने पिता के काम को विरासत के रुप में प्राप्त करता है। स्त्री और पुरुष के बीच श्रम का स्पष्ट बंटवारा होता है लेकिन आज बदलती परिस्थिति में ऐसे परिवार में परिवर्तन हो रहा है। संयुक्त परिवार धीरे–धीरे एकांकी परिवार में बदलता जा रहा है।

रॉस मेके (2005) ने अपने अध्ययन में बताया है कि परिवार की संरचना में परिवर्तन का प्रभाव परिवार में बच्चों पर भी पड़ रहा है।

आर.पी. देसाई ने 1956 से 1958 के बीच 423 परिवारों का सर्वेक्षण किया जिसमें दो पीढ़ी तक एकांकी परिवार एवं तीसरी एवं चौथी पीढ़ी में संयुक्त परिवार पाया जाता है।

परिवार की प्रवृत्ति

भारतीय समाज में परिवार जो,कि सामाजिक संगठन की प्रमुख इकाई है। परिवार जिसका मुख्य उद्धेश्य लिंग संबंधों की स्वीकृति व मान्यता प्राप्त संस्था के रुप मे संतानोत्पत्ति व उत्पन्न संतान के पालन–पोषण की व्यवस्था करना, अपने परिवार के बुजुर्गों की सेवा करना, अपने संस्कार और संस्कृति को आने वाली पीढ़ी में हस्तांतरित करना है। सभी समाजों में परिवार होते है, किन्तु सभी समाजों में न तो परिवार का स्वरुप एक–सा है न उनकी भूमिका एक–सी है कहीं बड़े परिवार हैं तो कहीं छोटे परिवार होते हैं। वर्तमान समय में आधुनिकता के फलस्वरुप परिवारों के प्रतिमानों में परिवर्तन आ रहा है और परिवारों को अनेंक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

ग्रामीण परिवार की विशेषताएं

1. **संयुक्त प्रकृति–**

   भारतीय ग्रामीण परिवार की प्रमुख विशेषता उसकी संयुक्त प्रकृति है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान होने के कारण भारतीय ग्रामों में संयुक्त परिवारों का विकास स्वाभाविक रुप से हो जाता है। कृषि एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें घर के सभी सदस्यों का कार्यो में,हितों में, रुचियों में और दृष्टिकोणों में समानता होने के कारण एक संयुक्त जीवन का विकास हो जाता है।

2. **कृषक परिवार–**

   ग्रामीण परिवार एक कृषक परिवार होता है क्योंकि उसके जीवन का प्रत्येक पक्ष कृषि व्यवसाय के साथ जुड़ा होता है। यद्यपि गांवों में श्रमिक और शिल्पी परिवार भी रहते हैं किन्तु उनका आस्तित्व भी कृषक परिवार के सन्दर्भ में ही होता है।

3. **मुखिया का सर्वोच्च स्थान–**

   ग्रामीण परिवार में मुखिया का स्थान सर्वोपरी होता है। उसके आदेश का पालन करना प्रत्येक सदस्य के लिए अनिवार्य होता है।

4. **अनुशासन–**

   ग्रामीण परिवार में अधिक अनुशासन रहता है। एक मुखिया की सत्ता होने के कारण परिवार के सभी सदस्य अपनी आयु और रक्त संबंधों के आधार पर एक–दूसरे का आदर सत्कार करते हैं और स्वाभाविक स्नेह और सौहार्द का वातावरण निर्माण करने में सहायक होते हैं।

5. **धर्म का महत्व–**

   ग्रामीण परिवार में धर्म तथा धार्मिक विचारों की प्रधानता है। ग्रामीण परिवार परंपरावादी तथा रुढ़िवादी होते हैं। इसलिए परिवार में धर्म तथा धार्मिक क्रिया–कलापों को अधिक महत्व दिया जाता है।

6. **सामाजिक नियमों का आधार–**

   ग्रामीण समाज में जिन मान्यताओं को प्रमुखता दी जाती है वे परिवार में ही विकसित होती है। सामाजिक नियंत्रण के सर्व प्रमुख अभिकरण के रुप में ग्रामीण परिवार सदस्यों का संचालन और निर्देशन करता है। यह प्रत्येक सदस्य के आचरण पर दृष्टि रखता है।

7. **आतिथ्य–**

   भारतीय समाज में ''अतिथि देवो भवः'' का प्रचलन है। ग्रामीण परिवारों में अतिथि को

देवताओं के समान मानकर उसकी सेवा की जाती है उन्हें भार नहीं समझा जाता है।

8. स्त्रियों की निम्न दशा–

ग्रामीण परिवारों में स्त्री की स्थिति दयनीय होती है। उसे उसके मौलिक अधिकारों से भी वंचित कर दिया जाता है। उसका कार्य क्षेत्र केवल रसोई तक सीमित रह जाता है।

9. राजनीतिक ढांचे की धुरी–

ग्रामीण परिवार ग्रामीण राजनैतिक संगठन का भी लघु प्रतिनिधि है। गांव की पंचायत या अन्य किसी राजनैतिक संगठन में परिवार का मुखिया ही प्रतिनिधि के रुप में प्रतिष्ठित होता है। किसी देश में राजा की जो स्थिति होती है, ग्रामीण परिवार में परिवार के मुखिया की भी वही स्थिति होती है।

10. रुढ़िवादिता–

ग्रामीण परिवार में प्रथाओं एवं परंपराओं को ईश्वर का आदेश माना जाता है। इनका उल्लंघन एक प्रकार से ईश्वरीय आज्ञा का उल्लंघन माना जाता है।

11. आर्थिक इकाई–

ग्रामीण परिवार एक आर्थिक इकाई के रुप में भी कार्य करता है। उत्पादन, उपभोग तथा वितरण में परिवार के सभी सदस्य मिलकर सहयोगी आधार पर कार्य करते हैं।

12. शीघ्र और अनिवार्य विवाह–

ग्रामीण भारत में विवाह एक पारिवारिक कर्तव्य समझा जाता है। परिवार के सभी सदस्यों के विवाह की व्यवस्था करना परिवार का ही दायित्व है। इस दायित्व को शीघ्र पूर्ण करने की कोशिश की जाती है। अतः छोटी आयु में ही बच्चों का विवाह कर दिया जाता है। किसी का विवाह न होना या टूट जाना परिवार की प्रतिष्ठा को कम कर देता है। अतः विवाह शीघ्र करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. परिवार प्रणाली में परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कारकों की व्याख्या करने के लिए अध्ययन करना।
2. पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली में परिवर्तन की जॉच करने के लिए अध्ययन करना।
3. भारत में ग्रामीण परिवार द्वारा वैश्वीकरण का विश्लेषण करने के लिए अध्ययन करना।

उपकल्पनाएं

1. परिवार प्रणाली में परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कारकों के कारण परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं।
2. पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली में परिवर्तन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव परिलक्षित हो रहा हैं।
3. भारत में ग्रामीण परिवार द्वारा वैश्वीकरण का अंधानुकरण किया जा रहा है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध–पत्र को लिखने के लिए ऑनलाईन सूची का उपयोग कर प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया है साथ ही उपलब्ध शोध आलेखों व प्रतिवेदनों का भी द्वितीयक स्रोत के रूप में उपयोग किया गया है। इसमें संदर्भ ग्रंथ, पाठ्यपुस्तक, पत्रिकाएं, समाचार–पत्र और इंटरनेट की जानकारी भी शामिल है। इस जानकारी के आधार पर शोध पत्र का वर्णनात्मक विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

म.प्र. में निवासरत् 200 उत्तरदाताओं का ऑनलाईन अनुसूची के माध्यम से शोधकर्ता द्वारा यह अध्ययन पूर्ण किया गया है।

परिवर्तन संबंधी अनुभाविक अध्ययन

इस संदर्भ में विभिन्न अनुभाविक अध्ययन के आधार पर स्पष्ट होता है कि पुरातन शैली के परिवारों की संख्या सामान्य अनुपात से कम नहीं है। जनगणना के आधार पर पाया गया है कि छोटे घरों का एक बड़ा अनुपात मूल रुप से देश की परंपराओं के अनुसार अब परिवार संयुक्त नहीं है और संयुक्त परिवार से टूटने और अलग घर स्थापित करने की प्रवृत्ति दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों के आधार पर ज्ञात होता है कि पुरातन शैली का संयुक्त परिवार अब शायद ही कहीं और कभी मिले तथा संयुक्तता की प्रकृति अब **"सह–निवास"** से मात्र दायित्व निभाने में परिवर्तित हो रही है।

पारिवारिक संरचना में परिवर्तन

पारिवारिक संरचना में आधुनिकता के कारण आज काफी परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं। भारत में परिवार की संरचना में परिवर्तनों के विश्लेषण में किये गये अध्ययनों में से कतिपय प्रसिद्ध विद्वानों जैसे आर.पी. देसाई, के.एम. कपाड़िया, एलिन रॉस, एम.एस. गोरे, ए.एम. शाह और सच्चिदानंद आदि के सर्वेक्षणों को स्पष्ट किया जा रहा है।

देसाई ने परिवारों के परिवर्तन के विषय में 03 निष्कर्ष दिये– 1. एकांकिता बढ़ रही है और संयुक्तता घट रही है तथा आवासीय एवं संगठनात्मक प्रकार के परिवारों में पति–पत्नी और बच्चों के समूह की प्रधानता है। 2. व्यक्तिवाद की भावना नहीं पनप रही है क्योंकि जो परिवार आवासीय व संगठनात्मक रुप से एकांकी है, उनमें से 50 प्रतिशत से कुछ कम परिवार उसी नगर में रहने वाले या नगर से बाहर रहने वाले परिवारों से सक्रीय रुप से संयुक्त है। 3. संयुक्तता के घेरे में नातेदारी संबंधों की परिधि छोटी होती जा रही है। संयुक्त परिवारों में माता–पिता व पुत्रों, भाई–बहन व चाचा–भतीजों के संबंधों की प्रधानता रहती है। जबकि वर्तमान अध्ययन में पारिवारिक रिश्ते बदलाव की ओर है। अब व्यक्ति संयुक्त परिवार की अपेक्षा अपने एकांकी परिवार के बारे में सोचता है व करता है इस कारण से परिवारिक रिश्तों में भी दूरिया बढ़ने लगी है।

कपाड़िया ने भी 1955–56 में अपने किये गये अध्ययन में ग्रामीण व नगरीय परिवारों में परिर्वतनों का तुलनात्मक अध्ययन किया था, उन्होंने गुजरात में सूरत जिले के एक नगर नवसारी और इस नगर के आस–पास के 15 ग्रामों का अध्ययन किया था कुल मिलाकर उन्होंने 1345 परिवारों का अध्ययन किया था, जिनमें से 18 प्रतिशत संयुक्त परिवार थे। इस प्रकार कपाड़िया ने परिवार के स्वरुप के विषय में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला–

1. ग्रामीण समुदाय में संयुक्त परिवारों का अनुपात एकांकी परिवारों के समान ही है। जब परिवार की प्रकृति जाति के सन्दर्भ में देखते हैं तो पता चलता है कि उच्च जातियों में संयुक्त परिवारों की प्रधानता है। संयुक्त और एकांकी परिवार का अनुपात 5:3 है। निम्न जातियों में एकांकी परिवार अधिक है। इनमें संयुक्त और एकांकी परिवारों का लगभग 9:11 का अनुपात है।
2. नगरीय समुदाय में एकांकी परिवारों की अपेक्षा संयुक्त परिवार अधिक है। अनुपात में एक संयुक्त परिवार के पीछे 0.77 एकांकी परिवार आते हैं। यह तथ्य उस पूर्व धारणा के बिल्कुल विपरीत है जिसमें

कहा जाता है कि बड़े नगरों में एकांकी परिवारों में अधिक लोग रहते हैं तथा परिवार की संरचना के विघटन में शहरों का अधिक प्रभाव रहता है।

3. समाघात गांवों (Combat Villages) में परिवार का स्वरुप ग्रामीण परिवार के स्वरुप से मिलता–जुलता है तथा नगरीय परिवार के स्वरुप से उसका कोई मेल नहीं है। दूसरे जहां तक जातीय भिन्नता को दर्शाने वाले स्वरुप का संबंध है, अन्य ग्रामों के विपरीत निकटस्थ व समाघात ग्रामों में व्यावसायिक जातियों में एकांकी परिवारों की ओर धीमी वृद्धि मिलती है और खेतीहर जातियां एकांकी परिवारों में धीमी कमी दर्शाते हैं। यह बताना कठिन है कि नगर के प्रभाव के कारण है या कि जातीय विविधता की अभिव्यक्ति मात्र है।

उपर्युक्त आंकड़ों के प्रकाश में कपाड़िया ने दो महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले–

1. संयुक्त परिवार का ढांचा एकांकी परिवार की ओर नहीं झुक रहा है।
2. ग्रामीण व नगरीय परिवारों के स्वरुप में अंतर जाति प्रथा में आर्थिक कारकों द्वारा हो रहे परिवर्तन के परिणामस्वरुप आया है।

एलिन रॉस ने एक नगरीय क्षेत्र में उच्च व मध्यम वर्गीय परिवारों में परिवर्तन के स्वरुप का अध्ययन किया था। अध्ययन के आधार पर रॉस ने निष्कर्ष निकाला कि

1. भारत में आज परिवारों की प्रवृत्ति परंपरागत संयुक्त परिवार से विखण्डन व एकांकी परिवार की ओर है।
2. लघु संयुक्त परिवार भारत में अब पारिवारिक जीवन का एक विशिष्ट मानक है।
3. अधिकतर लोग अपने जीवन का कुछ समय एकांकी परिवार में बिताते हैं।
4. अपने जीवन काल में अनेक प्रकार के परिवारों में रहना इतना अधिक हो गया है कि नगर निवासियों के सामान्य क्रम के रुप में परिवार के प्रकारों के एक चक्र की चर्चा की जा सकती है।
5. पिता और पितामह की अपेक्षा वर्तमान पीढ़ी के लिये रिश्तेदार कम महत्वपूर्ण होते हैं। वे उनसे मिलते भी कम है, उनके लिए उनमें स्नेह भी कम है और उनके प्रति अपना उत्तरदायित्व भी कम समझते हैं।
6. नगर में रहने वाला पुत्र अपने संबंधियों से काफी दूर हो गया है। अतः उन पर संयुक्त परिवार की तुलना में नियंत्रण भी कम रहता है।

ए.एम. शाह ने 1955–1958 की अवधि में गुजरात में एक गांव राधवानाज में 283 घरों का अध्ययन किया यह गांव अहमदाबाद से 35 किमी की दूरी पर स्थित है। रचना की दृष्टि से शाह ने परिवारों को दो समूह में बांटा : सरल व जटिल। सरल परिवार उसे माना गया जिसमें पितृ परिवार संपूर्ण या उसका कुछ अंश सम्मिलित हो, जबकि जटिल परिवार वह हुआ जिसमें दो या दो से अधिक पितृ परिवार या उनके अंश सम्मिलित हो। पितृ परिवार उसे कहा गया जिसमें एक व्यक्ति, उसकी पत्नी व उसके अविवाहित बच्चे हो। इसी प्रकार से जटिल परिवार में दो यो दो से अधिक पितृ परिवार सम्मिलित हो। शाह ने बताया कि 68 प्रतिशत परिवार उस गांव में सरल थे व 32 प्रतिशत जटिल। चुंकि शाह का सरल परिवार एकांकी परिवार का तथा जटिल परिवार संयुक्त परिवार का प्रतिनिधित्व करता है। यह माना जा सकता है कि शाह का अध्ययन भी ग्रामीण भारत में संयुक्त प्रणाली का टूटना दर्शाता है।

पारिवारिक संरचना में परिवर्तन के कारक

परिवार की संरचना में परिवर्तन किसी प्रभावों के एक समुच्चय से नहीं आया है और न यह संभव है कि इन कारकों में से किसी एक को प्राथमिकता दी जा सके। इस परिवर्तित होते हुए परिवार के लिए कई कारक उत्तरदायी है। औद्योगीकरण और उसके सार्वभौमिक मापदण्ड जो निरंतर विस्तृत क्षेत्र को प्रभावित कर रहे हैं, व्यक्तिवाद के आदर्श, समानता और आजादी तथा वैकल्पिक जीवन पद्धति की संभावना जैसे कारणों के सम्मिलन से ही संक्रमणकालीन परिवार का उदय हुआ है। समाज के विभिन्न समाजों की संरचना का विश्लेषण यह बताता है कि सामाजिक संरचना का निर्माण आधारित कारकों पर निर्मित होती है इनमें से अधिक महत्वपूर्ण कारक—आयु, यौन भेद, संबद्ध, स्थान तथा अन्य समितियां है। समाज की जड़े अतीत में होती है वह वर्तमान में जीता है और भविष्य उसके लिए चिंता और प्रावधान का विषय होता है। दुनिया में शायद ही ऐसा समाज हो जो पूरी तरह से अपनी परंपराओं से कटा हो। परंपराएं तब तेजी से विघटित होती है जब समाज की जातीय अस्मिता का क्षय होने लगता है और धीरे—धीरे इतनी बिगड़ती है कि समाज अपने अस्तित्व की आहट सूनने में असमर्थ हो जाता है, लेकिन इतना तो तय है कि समाज जड़ नहीं होता है। इस तरह परिवर्तन की बात मंदगति या उसका अभाव अनेक समस्याओं को जन्म देता है जिसका प्रभाव सामाजिक संरचना पर भी परिलक्षित होता है।

वर्तमान शोध हेतु चयनित व्यक्ति से साक्षात्कार प्रक्रिया द्वारा प्राप्त तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका—1 : अपने परिवार की युवा पीढ़ी शिक्षा ग्रहण करने में किसका अनुसरण करते हैं ?

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	अभिमत					कुल
		दादा—दादी	माता—पिता	भाई—बहन	स्वयं	अन्य	
		संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत
1	निरक्षर	00 / 00.00	08 / 4.00	26 / 13.00	16 / 08.00	0 / 0	50 / 25.00
2	प्राथमिक	00 / 00.00	22 / 11.00	12 / 6.00	04 / 2.00	0 / 0	38 / 19.00
3	माध्यमिक	02 / 1.00	16 / 8.00	20 / 10.00	02 / 01.00	0 / 0	40 / 20.00
4	उच्च माध्यमिक	08 / 4.00	08 / 4.00	08 / 4.00	08 / 4.00	02 / 1.00	34 / 17.00
5	स्नातक / स्नातकोत्तर	10 / 5.00	06 / 3.00	12 / 6.00	04 / 2.00	06 / 3.00	38 / 19.00
	कुल	20 / 10.00	60 / 30.00	78 / 39.00	34 / 17.00	08 / 4.00	200 / 100.00

क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं से मिली जानकारी के अनुसार 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार के युवा पीढ़ी शिक्षा ग्रहण दादा–दादी के अनुसार करते है, 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार की युवा पीढ़ी माता–पिता के अनुसार करते है, 39 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके युवा पीढ़ी शिक्षा ग्रहण अपने भाई–बहन के अनुसार करते हैं, 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार की युवा पीढ़ी शिक्षा ग्रहण अपने अनुसार करते है जबकि 4 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार की युवा पीढ़ी अन्य लोग जैसे चाचा–चाची या परिवार के अन्य संबंधियों के अनुसार करते हैं।

तालिका–2 : रोजगार ग्रहण में किसके विचार महत्वपूर्ण होते हैं ?

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	अभिमत					कुल
		दादा–दादी	माता–पिता	भाई–बहन	स्वयं	अन्य	
		संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत
1	निरक्षर	00 / 00.00	12 / 6.00	08 / 4.00	06 / 3.00	00 / 0.00	26 / 13.00
2	प्राथमिक	00 / 00.00	08 / 04.00	06 / 3.00	08 / 4.00	04 / 2.00	26 / 13.00
3	माध्यमिक	00 / 00.00	10 / 5.00	10 / 5.00	22 / 11.00	04 / 2.00	46 / 23.00
4	उच्च माध्यमिक	00 / 00.00	06 / 3.00	12 / 6.00	28 / 14.00	00 / 0.00	46 / 23.00
5	स्नातक / स्नातकोत्तर	08 / 4.00	10 / 5.00	18 / 9.00	20 / 10.00	00 / 0.00	56 / 28.00
	कुल	08 / 4.00	46 / 23.00	54 / 27.00	84 / 42.00	08 / 4.00	200 / 100.00

क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं से मिली जानकारी के अनुसार उत्तरदाताओं का कहना है कि 4 प्रतिशत उत्तरदाता दादा–दादी, 23 प्रतिशत उत्तरदाता माता–पिता, 27 प्रतिशत उत्तरदाता भाई–बहन, 22 प्रतिशत उत्तरदाता स्वयं एवं 4 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार की युवा पीढ़ी अन्य लोग जैसे चाचा–चाची या परिवार के अन्य संबंधियों के अनुसार करते हैं।

तालिका–3 : शादी–विवाह में किसका निर्णय महत्वपूर्ण होता हैं ?

क्र सं	शैक्षणिक स्तर	अभिमत					कुल
		दादा–दादी	माता–पिता	भाई–बहन	स्वयं	अन्य	

.		संख्या / प्रति शत	संख्या / प्रति शत	संख्या / प्रति शत	संख्या / प्रति शत	संख्या / प्रति शत	संख्या / प्रति शत
1	निरक्षर	00 / 0.00	06 / 3.00	04 / 2.00	00 / 0.00	00 / 0.00	10 / 5.00
2	प्राथमिक	00 / 0..00	06 / 3.00	08 / 4.00	02 / 1.00	00 / 0.00	16 / 8.00
3	माध्यमिक	02 / 1.00	20 / 10.00	12 / 6.00	08 / 4.00	00 / 0.00	42 / 21.00
4	उच्च माध्यमिक	06 / 3.00	30 / 15.00	14 / 7.00	12 / 6.00	02 / 1.00	64 / 32.00
5	स्नातक / स्नातकोत्तर	06 / 3.00	26 / 13.00	18 / 9.00	18 / 9.00	00 / 0.00	68 / 34.00
	कुल	14 / 07.00	88 / 44.00	56 / 28.00	40 / 20.00	02 / 1.00	200 / 100.00

क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं से मिली जानकारी के अनुसार उत्तरदाताओं का कहना है कि 7 प्रतिशत उत्तरदाता दादा–दादी, 44 प्रतिशत उत्तरदाता माता–पिता, 28 प्रतिशत उत्तरदाता भाई–बहन, 20 प्रतिशत उत्तरदाता स्वयं एवं 1 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार के अन्य लोग जैसे चाचा–चाची या परिवार के अन्य संबंधियों के अनुसार करते हैं।

तालिका–4 : क्या व्यक्तिवादी सोच अंतर पीढ़ी संघर्ष का प्रमुख कारण हैं ?

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत
1	निरक्षर	20	10.00	4	2.00	24 / 12.00
2	प्राथमिक	26	13.00	2	1.00	28 / 14.00
3	माध्यमिक	52	26.00	8	4.00	60 / 30.00
4	उच्च माध्यमिक	30	15.00	6	3.00	36 / 18.00
5	स्नातक / स्नातकोत्तर	40	20.00	12	6.00	52 / 26.00
	कुल	168	84.00	32	16.00	200 / 100.00

क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं से मिली जानकारी से स्पष्ट होता है कि 84 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार व्यक्तिवादी सोच अंतर पीढ़ी संघर्ष का प्रमुख कारण है, जबकि 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संबंध में कोई सार्थक उत्तर नहीं दिया। अतः वर्तमान समय में अंतर पीढ़ी संघर्ष का प्रमुख कारण व्यक्तिवादी सोच है।

तालिका–5 : संयुक्त परिवार का विघटन अंतर पीढ़ी संघर्ष हेतु उत्तरदायी है?

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत
1	निरक्षर	18	9.00	10	5.00	28 / 14.00
2	प्राथमिक	16	8.00	14	7.00	30 / 15.00
3	माध्यमिक	46	23.00	20	10.00	66 / 33.00
4	उच्च माध्यमिक	12	6.00	20	10.00	32 / 16.00
5	स्नातक / स्नातकोत्तर	30	15.00	14	7.00	44 / 22.00
	कुल	122	61.00	78	39.00	200 / 100.00

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 61 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वर्तमान समय में अंतर पीढ़ी संघर्ष के लिये संयुक्त परिवार का विघटन जिम्मेदार है क्योंकि एकल परिवार में बढ़े बुजुर्ग का सानिध्य प्राप्त नहीं हो पाता है जिससे बच्चों में व्यक्तिवादी सोच की भावना जाग्रत हो जाती है। जो कहीं न कहीं अंतर पीढ़ी संघर्ष के लिये जिम्मेदार है जबकि 39 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया।

तालिका–6 : क्या आधुनिकता के दौर में पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रचलन से युवा भ्रमित हो रहे हैं ?

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत
1	निरक्षर	24	12.00	4	2.00	28 / 14.00
2	प्राथमिक	26	13.00	2	1.00	28 / 14.00
3	माध्यमिक	50	25.00	6	3.00	56 / 28.00
4	उच्च माध्यमिक	34	17.00	4	2.00	38 / 19.00
5	स्नातक / स्नातकोत्तर	48	24.00	2	1.00	50 / 25.00
	कुल	182	91.00	18	9.00	200 / 100.00

क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं से मिली जानकारी से स्पष्ट होता है कि 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं इस बात से सहमत है कि आधुनिकता के इस दौर में परिवार में बढ़ते पाश्चात्य सभ्यता का प्रचलन युवा वर्ग को अपनी राहों से भटका रहा है, जबकि 9 प्रतिशत उत्तरदाताओं नें कोई जवाब नहीं दिया।

तालिका–7 : क्या आधुनिकता के इस दौर में परिवारों में तकनीकी / प्रबंधकीय / उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं में एकांकी परिवार का प्रचलन बढ़ा है ?

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत
1	स्नातक	30	15.00	2	1.00	32 / 16.00
2	स्नातकोत्तर	38	19.00	4	2.00	42 / 21.00
3	इंजीनियरिंग	48	24.00	3	1.50	51 / 25.50
4	प्रबंधकीय	40	20.00	2	1.00	42 / 21.00
5	मेडिकल	30	15.00	3	1.50	33 / 16.50
	कुल	186	93.00	14	7.00	200 / 100.00

क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं से मिली जानकारी से स्पष्ट होता है कि 93 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत है कि आधुनिकता के दौर में उच्च शिक्षित युवाओं में एकांकी परिवार का प्रचलन बढ़ा है। उच्च शिक्षा प्राप्त करते समय युवाओं में अकेले रहने की भावना का विकास हो जाता है जो कि विवाह के उपरांत एकांकी परिवार के रूप में परिणत हो जाता है, जबकि 7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई जवाब नहीं दिया।

तालिका–8: संयुक्त परिवार के विघटन में किस वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण हैं–

क्र. सं.	वर्ग	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत
1	निम्न वर्ग	98	49.00	10	5.00	108 / 54.00
2	मध्यम वर्ग	24	12.00	2	1.00	26 / 13.00
3	उच्च वर्ग	62	31.00	4	2.00	66 / 33.00
	कुल	184	92.00	16	8.00	200 / 100.00

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 49 प्रतिशत प्रतिशत निम्न वर्ग, इसके पश्चात्

31 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च वर्ग एवं 12 प्रतिशत मध्यम वर्ग के उत्तरदाता संयुक्त परिवार के विघटन में अपना योगदान देते हैं।

निष्कर्ष

संरचनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया में मूल्य की पुरानी संरचना को चुनौती दी गई है। बढ़ती हुई व्यक्तिवाद उम्र के पुराने पदानुक्रम अधिकार की वैद्यता पर सवाल उठाता है पुराने मूल्य प्रणाली में भी काफी बदलाव होता है। हालांकि परिवर्तन की इस प्रणाली में विभिन्न पीढ़ियों से संबंधित परिवार के सदस्यों की बीच आपसी सम्मान, प्यार और स्नेह को कम कर दिया है। उपभोक्तावादी संस्कृ ति ने स्थिति को और अधिक बढ़ा दिया है। पीढ़ी अंतराल ने स्थिति में कई वृद्ध निराश और उपेक्षित महसूस करते हैं। चुंकि भावनात्मक संबंध कमजोर हो गया है, कई युवा सदस्यों को परिवार में पहचान संकट की भावना महसूस होती है। परिवार में भावनात्मक समर्थन की कमी अक्सर युवाओं को शराब और नशीले पदार्थो की लत की ओर ले जाती हैं। संयुक्त परिवार की भावनाओं का पहलू, जो समाजशास्त्रियों द्वारा बहुत जोर दिया गया है, हमेशा समाज के बदलते संदर्भ में परिचालन और प्रभावी नहीं रहा है। भले ही एकांकी परिवार बढ़ रहे हैं, शायद इसलिये कि आधुनिक समाज में पाई जाने वाली अधिक भौगोलिक और सामाजिक गतिशीलता के कारण, ये परिवार सक्रिय परिजनों के साथ अलगाव में नहीं रह सकते हैं।

अंत में यह कहा जा सकता है, कि यद्यपि निम्न एवं उच्च वर्ग में संयुक्त परिवार की तीव्रता के साथ विघटन हो रहा है। शादी के पश्चात् निम्न वर्ग के लोग अलग परिवार बसा लेते है एवं उच्च वर्ग शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् नौकरी या व्यवसाय हेतु अलग परिवार बसा लेते हैं। महिलाओं की स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया है। अब वे शिक्षा ग्रहण करके घर की चाहर दीवारी से बाहर निकलकर कार्य कर रही हैं। वे आर्थिक दृष्टि से भी आत्मनिर्भर होती जा रही हैं। तथापि भारतीय समाज में आज भी अनेक ऐसी परिस्थितियां विद्यमान है जो संयुक्त परिवार को बनाये रखने में सहायक है। एकांकी परिवार की बढ़ती संख्या के आधार पर हम यह नहीं कह सकते कि भारतीय समाज में संयुक्त परिवार पूर्णतया विघटित हो जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. आहूजा, राम (2016) सामाजिक समस्याएं–रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
2. दुबे, माधवीलता (2022) सामाजिक परिवर्तन एवं विकास–मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
3. दुबे माधवीलता,चौहान अर्चना, बिसेन साधना सिंह (2020) सामाजिक परिवर्तन और विकास–मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल
4. दोषी एस.एल, जैन पी.सी. (2007) भारतीय सामाजिक व्यवस्था– नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर
5. गुप्ता एम.एल., शर्मा डी.डी. (2013) भारत में ग्रामीण समाज– साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
6. जैन पी.सी. (2021) ग्रामीण समाजशास्त्र–रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
7. पाटिल अशोक, भदौरिया डी. एस. एस. (2017) भारतीय समाज–मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
8. सिंह व्ही.एन, सिंह, जनमेजय (2020) भारत में सामाजिक आंदोलन–रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर